वार्षिक 150/- रुपये जुलाई 2025 वर्ष 27 अंक 09 पृष्ठ - 32 मूल्य 15/-रु.

गोसम्पदा

मध्य प्रदेश अंक

मध्य प्रदेश में भी गोमाता घोषित हो "राज्यमाता"

मध्यप्रदेश में उद्योग और
समृद्धि का नया युग
इन्वेस्ट
मध्यप्रदेश
ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-2025
₹30.77 लाख करोड़ के रिकॉर्ड निवेश प्रस्ताव
21.40 लाख नये रोज़गार
25000+ रजिस्ट्रेशन
60+ देश 100+ प्रतिनिधि
9 पार्टनर देश
300+ कम्पनियां
600+ बीटूजी मीटिंग
5000+ बीटूबी मीटिंग
500+ प्रवासियों की भागीदारी
प्रदेश की क्षमताओं में निवेशकों के विश्वास
के लिए हृदय से आभार...

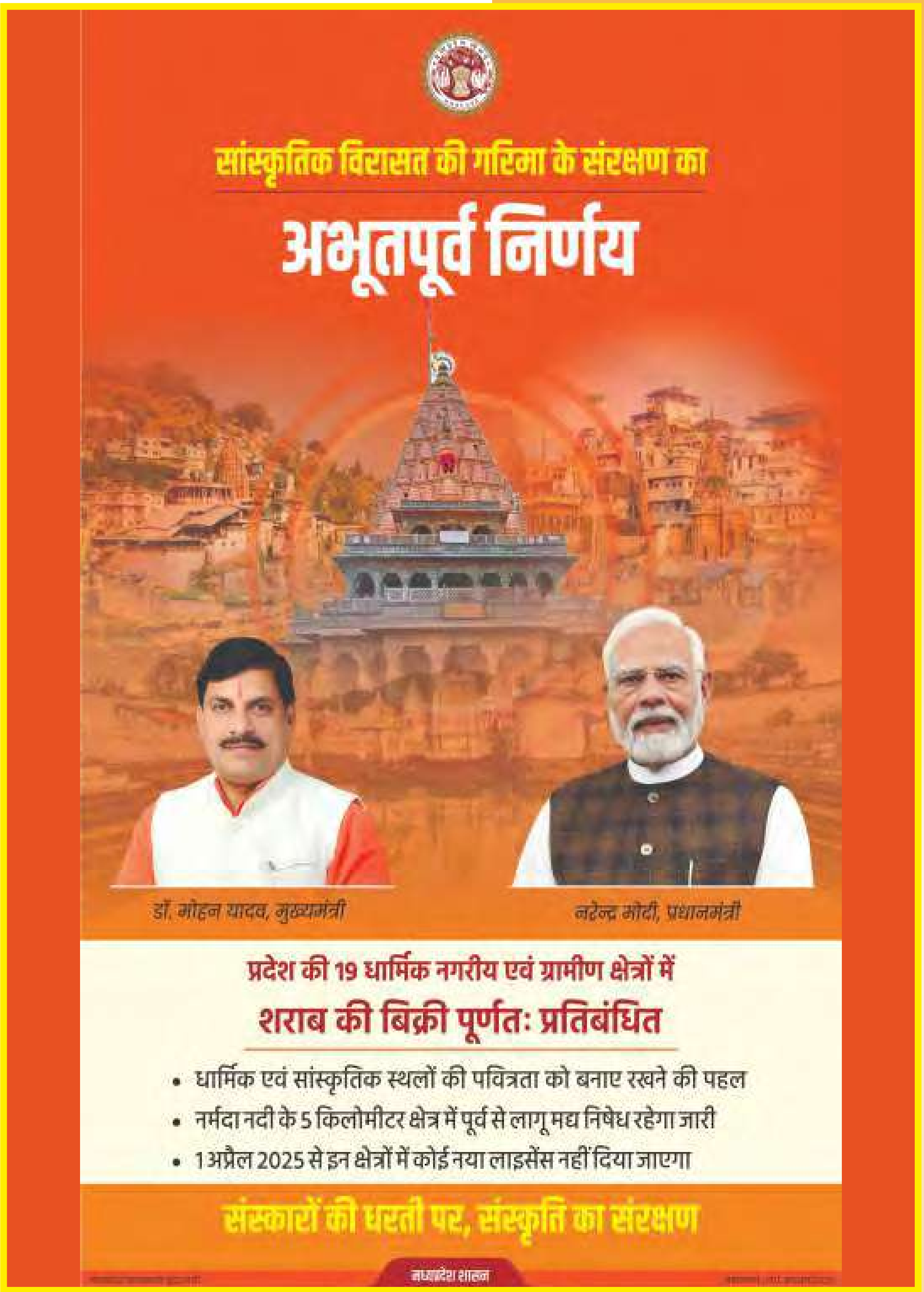
सांस्कृतिक विरासत की गरिमा के संरक्षण का
अभूतपूर्व निर्णय
डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
प्रदेश की 19 धार्मिक नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में
शराब की बिक्री पूर्णतः प्रतिबंधित
• धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थलों की पवित्रता को बनाए रखने की पहल
• नर्मदा नदी के 5 किलोमीटर क्षेत्र में पूर्व से लागू मद्य निषेध रहेगा जारी
• 1 अप्रैल 2025 से इन क्षेत्रों में कोई नया लाइसेंस नहीं दिया जाएगा
संस्कारों की धरती पर, संस्कृति का संरक्षण
मध्यप्रदेश शासन
D16056/25

सम्पादकीय

मध्य प्रदेश में भी गोमाता घोषित हो ''राज्यमाता''

सगोवंश संरक्षण–संवर्द्धन, पशुपालन और सामाजिक न्याय की त्रिवेणी के स्वरूप में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश बना राष्ट्रीय प्रेरणा का केंद्र। **सकारात्मक सोच, संवेदनशील शासन और लिए गये ऐतिहासिक नीतिगत निर्णयों** का सुपरिणाम है आज का मध्य प्रदेश। वर्ष 2024–25 मध्य प्रदेश के लिए न केवल गोरक्षा का प्रतीक वर्ष रहा, बल्कि यह वह कालखंड सिद्ध हुआ जिसमें मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश ने ग्रामीण आत्मनिर्भरता, गोवंश–आधारित अर्थव्यवस्था और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को एक साथ संरक्षित व संवर्धित किया गया। राज्य सरकार के ऐतिहासिक निर्णयों और जमीनी कार्यान्वयन के कारण आज मध्यप्रदेश देश के अग्रणी पशुपालन एवं दुग्ध उत्पादन राज्यों में प्रमुख स्थान पर स्थापित हो चुका है। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा गोवंश संरक्षण–संवर्द्धन के संदर्भ में लिए गये ऐतिहासिक नीतिगत निर्णय इस प्रकार हैं :–

1. स्वावलंबी गौशालाओं की स्थापना नीति : 2025 – एक युगांतकारी निर्णय– मध्यप्रदेश मंत्रि परिषद द्वारा गत 8 अप्रैल 2025 को **"स्वावलंबी गौशालाओं की स्थापना नीति : 2025"** को स्वीकृति प्रदान करना एक दूरदर्शी निर्णय है। यह नीति न केवल निराश्रित गोवंश की देखभाल सुनिश्चित करती है, बल्कि गौशालाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने की ठोस नींव भी रखती है। गौशालाओं को अब 20 रुपए के स्थान पर 40 रुपए प्रति गोवंश प्रति दिवस की सहायता मिलेगी। इससे गोवंश का पोषण स्तर बेहतर होगा और उनकी देखभाल में स्थायित्व आएगा। यह निर्णय प्रदेशभर की 2500 से अधिक गौशालाओं और उनमें आवासरत 4 लाख से अधिक गोवंश के संरक्षण हेतु अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। **भोपाल के बरखेड़ी–डोब में 10,000 गोवंशीय क्षमता की हाईटेक गौशाला का निर्माण इस दिशा में एक मील का पत्थर है।**

2. ''डॉ. अंबेडकर पशुपालन विकास योजना'' : सामाजिक न्याय को समर्पित नवाचार – मुख्यमंत्री द्वारा संचालित **मुख्यमंत्री पशुपालन विकास योजना को नया नाम देकर "डॉ.अंबेडकर पशुपालन विकास योजना"** किया जाना यह दर्शाता है कि सरकार सामाजिक न्याय, समावेश और आर्थिक आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों को नीति में बदलने के लिए संकल्पित है। **इस योजना के अंतर्गतः शून्य ब्याज दर पर पशुपालकों को किसान क्रेडिट कार्ड उपलब्ध कराया जाएगा। भ्रूण प्रत्यारोपण एवं नस्ल सुधार कार्यक्रम, बांझपन निवारण शिविर, मुख्यमंत्री डेयरी प्लस कार्यक्रम, दुधारू पशु प्रदाय एवं पुरस्कार कार्यक्रम, सार्वजनिक प्रचार और प्रशिक्षण अभियान आदि योजनाएँ पशुपालकों को आर्थिक रूप से मजबूत कर रही हैं।**

3. दुग्ध उत्पादन में प्रदेश राष्ट्रीय नेतृत्व की ओर– मध्यप्रदेश का दुग्ध उत्पादन 591 लाख किलोग्राम प्रतिदिन है, जिससे यह भारत का तीसरा सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक राज्य बन चुका है। प्रति व्यक्ति दुग्ध उपलब्धता 644 ग्राम प्रतिदिन है, जो कि राष्ट्रीय औसत 459 ग्राम से कहीं अधिक है। मुख्यमंत्री का संकल्प है कि प्रदेश भारत के कुल दुग्ध उत्पादन का 20 प्रतिशत योगदान करे, जो अब एक संभाव्य लक्ष्य बन चुका है। सांची ब्रांड के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण उत्पादों का सुलभ विपणन किया जा रहा है, जिससे दुग्ध उत्पादक किसानों को बेहतर मूल्य मिल रहा है।

4. तकनीकी नवाचार एवं पशु स्वास्थ्य की अनूठी पहलें– 1962 चलित पशु चिकित्सा वाहन, 406 नई इकाइयाँ, हाइड्रोलिक कैटल लिफ्टिंग वाहन, ग्वालियर में देश का पहला 100 टन गोबर–आधारित CNG प्लांट, 5.46 लाख से अधिक पशुओं को घर पर चिकित्सा सेवा, 240 लाख पशुओं का सफल टीकाकरण आदि आँकड़े दर्शाते हैं कि मध्यप्रदेश अब पशु स्वास्थ्य में भी अग्रणी राज्य बन चुका है।

5. शिक्षा और सिंचाई क्षेत्र में भी समान प्रगति–एडसिल (इंडिया) लिमिटेड के साथ एमओयू द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता सुधार की ओर कदम। मंदसौर में ₹2932 करोड़ की मल्हारगढ़ सिंचाई परियोजना की स्वीकृति, जो कृषि क्षेत्र को सींचेगी और गाँवों को समृद्ध करेगी।

मुख्यमंत्री जी को आत्मिक साधुवाद– गोसम्पदा पत्रिका के माध्यम से मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी का हार्दिक अभिनंदन एवं साधुवाद, जिनके नेतृत्व में **"आत्मनिर्भर गौ–समाज, समर्थ ग्रामीण अर्थव्यवस्था और न्याय आधारित प्रशासन"** का नया युग प्रारंभ हुआ है।

स्मरण रहे, भारत आदिकाल से ही आध्यात्मिक और अहिंसक राष्ट्र रहा है। यहां पर **जीव–हत्या** पर ही पूर्ण प्रतिबंध था। साथ ही यहां गोवंश आधारित जीवन शैली थी। गोधन को सर्वश्रेष्ठ–सर्वोपरि सम्पदा माना जाता था। गोवंश के महान योगदान के आधार पर ही भारत हर स्तर पर समर्थ– समृद्ध और वैभवशाली राष्ट्र था, अतः उसे **सोने की चिड़िया** भी कहा जाता था। इसलिए यहां पर गोहत्या को जघन्य–अक्षम अपराध माना जाता था। गोहत्या करने वाले को शास्त्रों के अनुसार अतिशय घोरदण्ड दिया जाता था। दुर्भाग्य से वर्तमान में सम्पूर्ण देश में गोवंश–हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध नहीं है। हर राज्य में अलग–अलग कानून बनाये गये हैं। मध्य प्रदेश में भी गोहत्यारे के लिए मात्र **सात वर्ष की सजा** और पाँच हजार रुपये के जुर्माने का प्रावधान है, जो न के बराबर है। अतः मुख्यमंत्री जी से करबद्ध अनुरोध है कि प्रदेश में गोहत्यारे के लिए फांसी की सजा और कम–से–कम पाँच लाख रुपये के जुर्माना का कठोरतम दण्ड का कानून बनाने के लिए त्वरित कारवाई प्रारंभ करें। साथ ही गोमाता के महान योगदान को देखते हुए महाराष्ट्र की तरह मध्य प्रदेश में भी **गाय को राज्यमाता** घोषित करने की कृपा करें।

(सम्पादक)

गोसम्पदा

वर्ष – 27 अंक-09 जुलाई – 2025 पृष्ठ – 28

संरक्षक :
हुकुमचंद सावला जी

दिनेश उपाध्याय जी
अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

सम्पादक : देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–22
मो. : 8130049868 कार्या. 011–26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी
मो. : 9838900596

प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी
मो. : 9810055638

प्रचार-प्रसार प्रमुख : डॉ. नरेश शर्मा जी
9811111602

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672 कार्या. : 011–26174732

साज-सज्जा : सुमन कुमार

वैधानिक सूचना

'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

सहयोग राशि

एक प्रति : रु. 30/–
वार्षिक : रु. 150/–
आजीवन : रु. 1500/–

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
बलि का बकरा अथवा बलि की गाय?	06
जानवर 'जीवन धन' है	09
ब्राजील में बच्चों को गोवंश के प्रति करुणा–दया का भाव सिखलाया जा रहा है	10
स्व. श्यामजी बल्लाल' जी की पुण्यतिथि पर विशेष रुग्णानुभव कार्यक्रम संपन्न	12
रामराज्य की परिकल्पना को साकार करता म.प्र.	14
गोरक्षा विभाग, दिल्ली प्रांत की बैठक संपन्न	16
भा.गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद, हिमाचल प्रदेश की बैठक आयोजित	17
मेरठ प्रांत, गोरक्षा विभाग की बैठक संपन्न	18
आक्रोशित हिन्दूवादी संगठनों ने जताया रोष गोवंश का कटा हुआ सिर पड़ा मिला	19
Cow Studies as Interdisciplinary Curriculum : A Comprehensive Analysis	20
GOMATA in Hindu Religion A Symbol of Dharma, Prosperity and Reverence	22

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं–

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली
खाता नम्बर – 04072010038910
IFSC CODE : PUNB0040710

नोट : शुल्क **"भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद"** के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011–26174732

पूजा पाराशर, स्वतंत्र लेखिका

बलि का बकरा अथवा बलि की गाय?

जीव और ब्रह्म एक साथ ही निवास करते हैं, इसलिए हत्या करके रक्त–मांस का सेवन मत करो। प्राण–घात मत करो। सबको अपने ही गोत्र अथवा कुल का समझो। गोरखनाथ जी कहते हैं, सब प्राणियों को अपने बच्चों (पोत, पूत, पुत्र) के समान देखो, वे सब उन्हीं जैसे हैं।'

जीव जो भी हो उसमें भी प्राण बसते हैं; उसमें भी जीवन है; उसे भी दर्द होता है; उसके अंदर भी ईश्वर का वास है, फिर क्यों उसके प्रति ऐसा व्यवहार किया जाता है? मात्र इस जिह्वा के स्वाद हेतु; धनोपार्जन हेतु या दूसरे की भावनाओं को आहत पहुँचाने हेतु! ये स्वार्थी पशुप्रवृत्त आदमी इन लाचार और असहाय जीवों को अपना शिकार बनाता आ रहा है।

'मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, पंजाब, दिल्ली, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों में गो–हत्या कानूनी अपराध व इसके लिए दंड हैं। उत्तर प्रदेश गो–हत्या निरोधक कानून के तहत 10 साल तक की जेल और जुर्माना है, वहीं हरियाणा में भी 10 साल की जेल और लाख रुपये का जुर्माना है। गुजरात में तो गो हत्या करने वालों को उम्र कैद की सजा है।' फिर भी आदमी को भय नहीं है और जिन राज्यों में ऐसा कोई कानून नहीं, आंशिक प्रतिबंधित या कोई प्रतिबंध नहीं है तो सोचिए वहाँ क्या हाल होगा?

सच है, हाल ही में गतमाह मुस्लिम त्यौहार बकरीद पर जैसे एक नया चलन प्रारंभ हो गया हो। पूरे देश के लिए यह निंदनीय व चिंताजनक बात है कि बकरीद पर गो–हत्या को अंजाम दिया गया। जहाँ एक ओर गोवंश सुरक्षा और उनकी संख्या वृद्धि की बात की जा रही है, वहीं दूसरी ओर **'बलि का बकरा'** के स्थान पर **'बलि की गाय'** के रूप में नयी कहावत बनाने के लिए लोग अग्रसर हैं। यह अन्याय है। इस पर चुप्पी नहीं अपितु तुरंत कार्रवाई होनी चाहिए, जिससे व्यक्ति ऐसा करने के पहले

सोचने पर ही उसके अंदर भय पैदा हो और देश में इस तरह की घटनाएं पुनः देखने को कभी न मिलें। भारत देश में रहना है तो **'गाय को माता'** का दर्जा देना ही होगा। उसका माता के समान सम्मान करना ही होगा, चाहे वह किसी भी धर्म या जाति का हो!

इस बार बकरीद त्यौहार के दौरान सोशल मीडिया पर एक वीडियो बहुत वायरल हुआ, जिसमें दिखाया गया है कि कर्नाटक के कई स्थानों पर किस प्रकार गो हत्याएँ हुई हैं। कई क्षेत्रों में गायों को बंद करके रखा गया। उस क्षेत्र के नालों और सड़कों पर गाय का खून–ही–खून दिखाई पड़ रहा है। खराब खाली फ्रिज के अंदर और बड़े–बड़े कूड़ेदानों में गायों के सींगों और उनकी हड्डियों को भर–भर कर रखा गया है। काटने के लिए बंद करके रखी गायें हृष्ट–पुष्ट, दुधारू व कम आयु की हैं। **बसवकल्याण विधायक शरणु सलागरा जी** ने घटनास्थल पर पहुँचकर इस बर्बरता का कड़ा विरोध किया है और पूरे देश के समक्ष इस सच्चाई को उजागर किया।

मात्र इतना ही नहीं बंगाल के उत्तर 24 परगना के सुंदरवन के ढोलाहाट पशु मंडी में बकरीद पर बकरों के स्थान पर गाय–भैंसों को सैकड़ों की संख्या में देखा गया। जब वहाँ के लोगों से पूछताछ की गई तो पता चला कि बकरीद पर गाय–भैंसों और बछड़ों की कुर्बानी दी जाती है। ठीक ऐसा ही हाल हैदराबाद में भी देखा गया।

देश के कई ऐसे स्थान हैं, जहाँ पर ऐसी घटनाएँ आम बनती जा रही हैं। अतः इसका समाधान क्या है? और कब होगा? इस प्रकार की अमानवीयपूर्ण घटनाएँ देश की

सभ्यता व संस्कृति की सुरक्षा एवं संरक्षण पर प्रश्न चिह्न खड़ी कर रही हैं, जिनका निदान अतिशीघ्र होना अत्यंत आवश्यक है।

'मनुस्मृति' में गोहत्या पर दंड व प्रायश्चित का विधान मिलता है – **"उपपातकससंयुक्तो गोघ्नो मासं यवान् पिबेत्। कृत्वापो वसेद् गोष्ठे चर्मणा तेन संवृतः।।" (11.108)** 'यदि गोहत्या जैसा कोई अपराध किया गया है तो गौ–हत्यारे को तीन महीने तक जौ पीना (गाय के मूत्र में पकाए गए जौ का दलिया पीना) होगा तथा अपना सिर मुंडाकर तथा गाय की खाल ओढ़कर (अपने द्वारा मारी गई गाय की खाल से खुद को ढककर) गौशाला में रहना होगा।'

इस बार बकरीद त्यौहार के दौरान सोशल मीडिया पर एक वीडियो बहुत वायरल हुआ, जिसमें दिखाया गया है कि कर्नाटक के कई स्थानों पर किस प्रकार गो हत्याएँ हुई हैं। कई क्षेत्रों में गायों को बंद करके रखा गया। उस क्षेत्र के नालों और सड़कों पर गाय का खून–ही–खून दिखाई पड़ रहा है। खराब खाली फ्रिज के अंदर और बड़े–बड़े कूड़ेदानों में गायों के सींगों और उनकी हड्डियों को भर–भर कर रखा गया।

गंगानाथ झा द्वारा रचित 'मेधातिथि की टीका के साथ मनुस्मृति' (अनूदित) में गोहत्या के लिए दंड व प्रायश्चित स्वरूप कई कड़े नियमों के साथ तप करने की बात कही गयी है – गौतम स्मृति (22.18) – 'गाय की हत्या का प्रायश्चित वैश्य की हत्या के समान ही है (तीन वर्ष तक संयम का व्रत रखना तथा एक गाय और एक बैल दान देना)।'

विष्णु स्मृति (50.16–24) – 'वह व्यक्ति एक महीने तक गायों की सेवा करेगा, उसके बाल और दाढ़ी मुंडे होंगे; जब गायें आराम करें तो वह आराम करने के लिए बैठ जाएगा; और जब वे स्थिर खड़ी हों

तो वह खड़ा हो जाएगा; वह दुर्घटनाग्रस्त गाय की सहायता करेगा; और गायों को खतरों से बचाएगा; वह गायों को उनसे बचाने के बिना ठंड और इसी तरह के खतरों से खुद को नहीं बचाएगा; वह गाय के मूत्र से खुद को धोएगा; और पाँच गोजातीय उत्पादों पर निर्वाह करेगा। **यह गो–व्रत , गो–तपस्या है, जिसे उस व्यक्ति द्वारा किया जाना चाहिए जिसने गाय को मार डाला हो।'**

याज्ञवल्क्य स्मृति (3. 264–265) – 'जिस मनुष्य ने गौहत्या की हो, वह एक महीने तक गोवंश के पंचगव्य का पान करे, गोशाला में सोए, गायों की सेवा करे; तत्पश्चात एक गाय दान देकर वह शुद्ध हो जाता है; अथवा वह शांतिपूर्वक प्रजापत्य अतिकृच्छ्र (पापों के प्रायश्चित हेतु तप) का तप करे; अथवा तीन दिन उपवास करके दस गायें दान करे।'

पराशर स्मृति (8.31–42) – 'पूरा सिर मुंडाकर वह दिन में तीन बार स्नान करे, रात में गायों के बीच रहे और दिन में उनके पीछे चले; जब गर्मी हो या वर्षा हो या बहुत सर्दी हो या जब तेज हवा चल रही हो, तब तक वह अपनी रक्षा नहीं करेगा जब तक वह अपनी पूरी क्षमता से गायों की रक्षा न कर ले। यदि वह किसी खेत में या खलिहान में चरती हुई गाय को देखे, चाहे वह उसकी अपनी हो या किसी और की तो वह किसी को न बताए; और न ही वह किसी बछड़े को दूध पीते हुए देखे। जब गायें पानी पीएँ तो वह भी पानी पी ले, और जब गाय गिर जाए या कीचड़ में फँस जाए तो अपनी पूरी शक्ति से उसे बचा ले। गो–हत्या के दोष से मुक्त होने के लिए प्रजापत्य अतिकृच्छ्र का तप करे (तपस्या के रूप में) – 'एक दिन में एक बार भोजन करना; एक दिन में मात्र शाम को भोजन करना; एक दिन वह मात्र वही खाएगा जो उसे बिना माँगे मिले; और एक दिन वह हवा पर रहेगा; दो दिन वह केवल एक बार भोजन करेगा; दो दिन वह वही खाएगा जो उसे बिना माँगे मिले, दो दिन वह केवल रात को भोजन करेगा; दो दिन वह हवा पर रहेगा। इनमें से प्रत्येक नियम तीन दिन तक किया जाना चाहिए; और चार दिन तक निर्धारित तपस्या करने के बाद, वह ब्राह्मणों को भोजन कराएगा, उन्हें दान देगा और पवित्र ग्रंथों का पाठ करेगा। ब्राह्मणों को भोजन कराने के बाद, गो–हत्यारा निस्संदेह शुद्ध हो जाता है।'

इस प्रकार हमारे ऋषि–मुनियों ने गोहत्या को जघन्य अपराध बताया है। उपरोक्त दंड विधानों को देखते हुए पता चलता है कि गोमाता हमारे जीवन का कितना महत्वपूर्ण अंग है, जिसकी रक्षा के लिए बड़े–से–बड़े दंड व प्रायश्चित का प्रावधान रखा गया था। आज के दंड पूर्ववत् दंडों के सामने नगण्य से प्रतीत होते हैं, अतएव व्यक्ति को इन अपराधों को करने में न किसी प्रकार का भय है न पश्चाताप। गोहत्या जैसे जघन्य अपराध हेतु सम्पूर्ण भारत के लिए कड़े–से–कड़ा कानून बनाना चाहिए, जिसमें दंड का ऐसा प्रावधान हो कि इस प्रकार की क्रूरता दिखाने वाला, ऐसा करने की सोचने से पहले ही डरे।

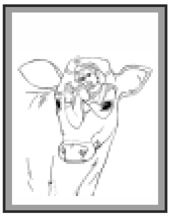

जानवर 'जीवन धन' हैं

पशु शब्द का उपयोग उचित नहीं: राष्ट्रपति

बरेली, 30 जून— (भाषा) राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सोमवार को कहा कि जानवरों के लिए पशु शब्द का इस्तेमाल करना ठीक नहीं है। मुर्मू जानवरों को जीवन धन करार दिया। राष्ट्रपति ने भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (आईवीआरआई) के 11वें दीक्षांत समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा, जानवरों के बिना किसान आगे नहीं बढ़ सकता, इसलिए पशु शब्द ठीक नहीं लगता। उनके बिना हम जिंदगी सोच नहीं सकते। उन्होंने कहा, हमारी संस्कृति जीव—जंतुओं में ईश्वर की उपस्थिति को देखती है। पशुओं से हमारे देवताओं और ऋषि—मुनियों का संवाद होता है। यह मान्यता भी इस सोच पर आधारित है। भगवान के कई अवतार भी इसी विशिष्ट श्रेणी में हैं। मुर्मू ने जैव विविधता के महत्व को दर्शाते हुए कहा कि आईवीआरआई जैसी संस्थाओं से अपील है कि वे जैव विविधता को बढ़ाने में अग्रणी भूमिका निभाएँ और आदर्श प्रस्तुत करें।

उन्होंने अपने बचपन की किस्सों का उदाहरण देते हुए कहा, हम जब छोटे थे तब बहुत सारे गिद्ध थे, लेकिन आज गिद्ध लुप्त हो गए हैं। मुर्मू ने कहा, मुझे लगता है कि गिद्ध के विलुप्त होने के पीछे पशु चिकित्सा में इस्तेमाल होने वाली रासायनिक दवाओं की भूमिका है। बहुत सारे कारणों में यह भी एक कारण है। ऐसी दवाओं पर प्रतिबंध लगाना गिद्धों के संरक्षण की दिशा में सराहनीय कदम है।

उन्होंने दवाओं पर प्रतिबंध लगाने के लिए वैज्ञानिकों के प्रति आभार जताया और कहा, कई प्रजातियाँ विलुप्त हो रही हैं या विलुप्त होने की कगार पर हैं। इन प्रजातियों का संरक्षण पर्यावरण संतुलन के लिए बहुत ही आवश्यक है। आईवीआरआई जैसे संस्थाओं से अपील है कि वे जैव विविधता को बढ़ाने में अग्रणी भूमिका निभाएँ और आदर्श प्रस्तुत करें। मुर्मू ने समारोह में मौजूद विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा, आज पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में छात्राओं की बड़ी संख्या देखकर काफी गर्व महसूस कर रही हूँ । बेटियाँ अन्य क्षेत्रों की तरफ पशु चिकित्सा क्षेत्र में भी आगे आ रही हैं, यह बहुत ही शुभ संकेत है। मुर्मू ने महिलाओं से आगे आने का आह्वान करते हुए कहा कि गाँवों में पशुओं, गायों की सेवा माँ—बहनें करती थीं, क्योंकि माता—बहनों से उनका जुड़ाव है। राष्ट्रपति ने कहा, आप (विद्यार्थियों) सबने बेजुबान पशुओं की चिकित्सा को करियर के रूप में चुना है और मैं चाहती हूँ कि आपमें कल्याण की भावना बनी रहे और मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी इसी मूल भावना से कार्य करते रहेंगे।

राष्ट्रपति ने कहा, मेरी सलाह है कि जब भी आपके सामने दुविधा का क्षण आए, आप उन बेजुबान पशुओं के बारे में सोचिए जिनके कल्याण के लिए आपने शिक्षा ग्रहण की है, आपको सही मार्ग जरूर दिखाई देगा। उन्होंने पशु चिकित्सा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में आधुनिक प्रौद्योगिकी के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा, प्रौद्योगिकी अन्य क्षेत्रों की तरह पशु चिकित्सा एवं देखभाल में भी क्रांतिकारी परिवर्तन लाने की क्षमता रखती है।

प्रोफ़ेसर अनु पांडे

ब्राजील में बच्चों को गोवंश के प्रति करुणा-दया का भाव सिखलाया जा रहा है!

भारत में गायों को पूजनीय माना जाता है और उन्हें माता का दरजा दिया जाता है। भारत के कई हिस्सों में उनकी पूजा की जाती है और उन्हें पवित्र माना जाता है। फिर भी हम उन्हें सड़कों पर घूमते, कूड़ा खाते और सड़कों पर वाहनों से टकराकर मरते हुए देखते हैं। वे दुख की जिंदगी जीती हैं और अकसर एक दयनीय मौत मरती हैं। उनके दूध के लिए उनका शोषण किया जाता है और उनके बछड़ों को भूखा रखा जाता है, क्योंकि आज वे दूध और पैसे कमाने का माध्यम हैं और कुछ नहीं।

आधुनिक भारत में गाय का आवासीय क्षेत्रों में कोई स्थान नहीं है। शहरी लोग चाहते हैं कि उनका शहर गायों से मुक्त हो और इसलिए उन्हें लगता है कि गाय का सही स्थान शहर से दूर डेयरी फार्म या गौशालाओं में है। आज के भारत में वह केवल नाम के लिए माता है, क्योंकि कई लोगों ने उसे अपने हाथों से न स्पर्श किया है और न गौ ग्रास खिलाया है। और ये इसलिए है क्योंकि उनको अपने घरों, स्कूलों, कॉलेजों, कार्यालयों या उसके आस–पास कभी भी गौ माता के साथ मेलजोल बढ़ाने का अवसर नहीं मिला।

अंग्रेजों से प्रेरित होकर अधिकांश भारतीय बिल्लियों और कुत्तों को पालतू जानवर के रूप में रखना पसंद करते हैं, लेकिन गायों और बैलों को नहीं। शहरी भारतीयों की मानसिकता ऐसी ही है। इस मानसिकता ने हमारी गायों और बैलों पर कहर ढाया है। जैसे ही नंदी (बैल) पैदा होते हैं, उन्हें अकसर सड़कों पर छोड़ दिया जाता है क्योंकि वे किसी काम के नहीं होते। वे दूध नहीं देते, न ही खेती और परिवहन के लिए

इस्तेमाल किए जाते हैं। मंदिरों में उन्हें मूर्ति (नंदी) के रूप में पूजा जाता है, लेकिन वास्तविक जीवन में उनके साथ दुर्व्यवहार और उपेक्षा की जाती है। कई बूचड़खानों में पहुँच जाते हैं।

सनातन धर्म में हर प्राणी का महत्व है। हमारे पूर्वज पहली रोटी गाय को और आखिरी रोटी कुत्तों को खिलाते थे, लेकिन क्या हमारी युवा पीढ़ी इस परंपरा का पालन कर रही है? वे न तो गाय को खाना खिलाते हैं और न ही अपने घर के बाहर बैठे कुत्तों को। इसके बजाय, आज का भारतीय विदेशी नस्ल के कुत्तों को पालतू जानवर के रूप में रखना पसंद करता है और भारतीय गायों और कुत्तों को भगा देता है। आज के बच्चे गायों से दूर होते जा रहे हैं। क्या यह प्रथा सही है?

इसके ठीक उलट **ब्राज़ील** के बच्चों को गायों से बातचीत करना सिखाया जा रहा है। वे गायों को खाना खिलाते हैं और उनके साथ खेलते हैं। आधुनिक ब्राज़ील अपने बच्चों में गायों के प्रति प्रेम और करुणा पैदा कर रहा है। वे उन्हें गले लगाना और उनसे बातचीत करना पसंद करते हैं।

अब समय आ गया है कि भारत ब्राज़ील से सबक लेकर अपने घरों में गाय और बैल रखने की अपनी पुरानी परंपरा को फिर से शुरू करे। सरकार को ऐसी नीतियाँ और नियम बनाने चाहिए जिससे हर नागरिक को अपने घर में जगह के हिसाब से गाय और बैल रखने की आज़ादी मिले। हर मंदिर, गुरुद्वारा, आश्रम और धर्मशालाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे अपने यहां एक से दो बेसहारा और बूढ़ी गाय और बैल रखें। इस तरह हर श्रद्धालु को उनसे बातचीत करने का मौका मिलेगा और ऐसी गायों और बैलों के लिए आश्रय बनाने और चलाने पर होने वाले सरकारी खर्च में भी कमी आएगी।

कॉलेज और शैक्षणिक संस्थानों को भी अपने परिसर में एक से दो परित्यक्त या बूढ़ी गायों और बैलों को रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे हमारी युवा पीढ़ी को उनसे बातचीत करने का अवसर मिलेगा। अंत में, आवासीय कॉलोनियों के पास गौशालाएँ बनाई जानी चाहिए ताकि उस क्षेत्र के निवासी गाय की सेवा कर सकें। इससे उस क्षेत्र के बच्चों में अच्छे संस्कार आएंगे और गाय–गोवंश की सुरक्षा भी सुनिश्चित होगी जो निवासियों (गौ सेवकों) की निगरानी में रहेंगीं और शोषण से भी बच जायेंगीं।

हिंदू धर्म में दो महत्वपूर्ण देवता हैं **भगवान कृष्ण और भगवान शिव**। गायें भगवान कृष्ण की प्रिय हैं, जबकि नंदी भगवान शिव के प्रिय हैं। इसलिए अगर कोई दोनों का आशीर्वाद चाहता है तो उन्हें गोमाता और नंदी, दोनों का ख्याल रखना होगा और उनके साथ प्यार और सम्मान से पेश आना होगा, तभी भारत एक समृद्ध राष्ट्र बन पायेगा।

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी., आयुर्वेद)

स्व. श्यामजी बल्लाळ' जी की पुण्यतिथि पर विशेष
रुग्णानुभव कार्यक्रम संपन्न

नागपुर। गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, देवलापार, नागपुर संस्था का प्रतिवर्ष होने वाला **'रुग्णानुभव'** कार्यक्रम वनामती परिसर के एक सुसज्ज सभागृह में गत 28 जून को संपन्न हुआ। इस अवसर पर 'गोविज्ञान अनुसंधान केंद्र' के संस्थापक 'स्व. श्यामजी बल्लाळ' जी की पुण्यतिथि रहती है और शिवाजीनगर स्थित चिकित्सा केन्द्र के वर्धापन दिन का भी आयोजन रहता है।

कार्यक्रम का उद्‌घाटन राज्यमंत्री श्री. आशीष जैस्वाल ने किया। उन्होंने संबोधित करते हुए कहा कि अनेक क्षेत्रों में भारत विश्व को मार्गदर्शन कर रहा है। अब भविष्य में भी यह सिलसिला जारी रहेगा, ऐसी आशा व्यक्त की। पथभ्रष्ट हुए रोगियों का आशास्थान अपनी पुरानी चिकित्सा पद्धति लेगी ऐसा विश्वास जताया। डॉ. विन्की रूघवानी, अध्यक्ष महाराष्ट्र मेडिकल काऊंसिल उपस्थित थे। सीम्स के निदेशक डॉ. राजपाल कश्यप, एम्स नागपुर की डॉ. गायत्री मुथीयन, डॉ. रजनीश सावरबांधे, डॉ. जितेंद्र साहू जैसे बैद्यनाथ ग्रुप के डायरेक्टर श्री. सुरेश शर्मा, विठोबा कंपनी के सुदर्शन शेंडे, डॉ. सुनील गुप्ता आदि अनेक विशेषज्ञ उपस्थित थे। डॉ. राजपाल कश्यप और IMA के डॉ. सावरबांधे ने पंचगव्य चिकित्सा की वैज्ञानिक पद्धति, अनुसंधान और इनके प्रभावों को देखकर कहा कि Allopathy और पंचगव्य आयुर्वेद पद्धति की सम्मिलित चिकित्सा की जाये तो रोगों का उपचार जल्द होगा। भारतीय चिकित्सा पद्धति का भविष्य उज्ज्वल होगा।

संस्था के अध्यक्ष श्री. पद्मेशजी गुप्ता ने पंचगव्य अनुसंधान केंद्र को 'गोतीर्थ' के रूप में स्थापित करने की सराहना की और आभार प्रकट किया। आगामी राज्य बजट में अनुसंधान हेतु विशेष

राशि स्वीकृत की जाये। संस्था के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. हेमंत जांभेकर ने पंचगव्य पर आधारित औषधियों के वैज्ञानिक शोध, परिणाम एवं औषधि निर्माण की जानकारी दी। एफडीए की मान्यता प्राप्त औषधियों से हजारों रोगियों को वेदनामुक्त किया गया है, यह जानकारी दी। कार्यकारी सदस्य अमित वाजपेयी ने www.govigyanshop.com पोर्टल से देशभर में कई जगह औषधियाँ उपलब्ध की जा रही है, यह बतलाया।

गोविज्ञान की प्रधान वैद्य डॉ. नांदिनी भोजराज, जो गत 22 साल से संस्था से जुडी हुई हैं, ने गोविज्ञान अनुसंधान केंद्र के निर्माण की आवश्यकता बताई और गो संबंधित वैज्ञानिक तथ्यों का आधार लेकर आयुर्वेदिक–पंचगव्य की दवाईयाँ कारगर सिद्ध हुई हैं, यह जानकारी दी। स्व. श्यामजी बल्लाळ की मृत्यु पश्चात् उनका काम कैसे संभाला और गाय की उपस्थिति, जमीन, पानी और वातावरण की शुद्धि कितनी अहम है, इसका महत्व बतलाया।

संस्था से जुडी वैद्य श्यामला रेखडे ने रूग्णानुभव कार्यक्रम का संचालन किया। संस्था को वर्तमान स्थिति तक पहुँचाने में जिन गुरु– आचार्यों का आशीर्वाद मिला उन्होंने संस्था के चिकित्सा केंन्द्रो में कार्यरत वैद्यों का दिशानिर्देश किया।

रूग्णानुभव कार्यक्रम में फार्मेसी कॉलेज के प्रोफेसर डॉ. प्रकाश इटनकर ने औषधि निर्माण, वैज्ञानिकता और रूग्ण की भूमिकाओं में 'पंचगव्य की सशक्तता और सकारात्मकता बताई। हर्षित जन्म से ही मधुमेह व्याधि से पीड़ित था। झुर्रियों वाली काली त्वचा और खुजली से परेशान लड़का अब चैन की नींद लेता है। अपर्णा तांबे ने तक्रारिष्ट (छाछ) से अपने पाचन में सुधार होने की जानकारी दी। चित्रलेखा देशपांडे ने महिलाओं की रजोनिवृत्ति के समय होने वाली परेशानियों में पंचगव्य औषधियों से छुटकारा मिला, यह जानकारी दी। पंचगव्य औषधियों का कीमोथेरपी के दौरान उपयोग करने से शारीरिक और मानसिक लाभ मिला, ऐसी कैंसर पीड़िता डॉ. आभा सारगांवकर ने बतलाया। एक सौ एक वर्ष आयुष्य प्राप्त दत्तात्रय पाठक ने बचपन से गोमूत्र और कामधेनु गोमूत्र अर्क के सेवन से आज तक उन्हें दवाखाने में भर्ती होने की नौबत नहीं आयी, यह जानकारी दी।

पंचगव्य औषधियों के साथ अगर पंचकर्म किया जाये तो शरीर की शुद्धि होने से औषधियों का असर जल्दी होता है। इस संस्था के परिचारक सौ. अनिता गवळी, श्री. रवीन्द्र भोरगड़े और सौ. निर्मला मारोतकर रूग्णों को दिलासा देकर उनकी सुविधा देखकर पंचकर्म जैसे स्नेहन, स्वेदन, बस्ती, नस्य, शिरोधारा, पोट्टली स्वेदन करते हैं, अर्थात ये सभी पंचकर्म की रीढ़ ही संभालते हैं।

डॉ. संजय वाते जो भंडारा फार्मेसी कॉलेज के डीन हैं और गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र के कमेटी के सदस्य भी हैं, जिन्होंने बताया कि सोरायसिस व्याधि से पंचगव्य औषधियों से ही मुक्ति पाई है। पंचगव्य औषधियों का वैज्ञानिक अनुसंधान ही इसे विश्व स्तर पर ले जाएगा। उन्होंने सभी का आभार व्यक्त किया।

संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन संस्था के सचिव श्री. सनतकुमार गुप्ता ने किया। इस सफल आयोजन के लिये डॉ. हेमंत जांभेकर, श्री. सनतकुमार गुप्ता, श्री. हितेंद्र चोपकर, डॉ. मनोज तत्वादि, डॉ. संजय एकापुरे, वैद्य नंदिनी भोजराज, डॉ. पुष्पहास बल्लाळ, प्रतीक सरावगी, योगेश कटारिया, प्रशांत तितरे, सुनील मेहाडिया, पंकज रूघवानी, समेत सभी संस्था के कार्यकर्ताओं ने अथक परिश्रम किया।

रामराज्य की परिकल्पना को साकार करता म.प्र.

मध्यप्रदेश में रामराज्य और सुशासन की अवधारणा को साकार करने के लिये प्रदेश सरकार मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रतिबद्धतापूर्वक कार्य कर रही है। सुशासन ही रामराज्य का स्वरूप है। राज्य सरकार ने जन कल्याण के लिये जो निर्णय लिये हैं वे रामराज्य की परिकल्पना के अनुरूप हैं। इस निर्णय–प्रक्रिया में सहभागी बनना सभी के लिये सौभाग्य की बात है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम हमारे रोम–रोम में बसे हैं। वे हमारे जीवन के हर क्षेत्र में हर कदम पर साथ हैं। रामराज्य की मूल अवधारणा में निहित शासन, त्वरित न्याय, खुशहाल और बेहतर समाज तथा जनभागीदारी शामिल है। चित्रकूट एवं ओरछा सहित प्रदेश में संपूर्ण राम वन गमन पथ के सर्वांगीण विकास के लिये कार्य प्रारंभ हो गया है। भगवान श्रीराम और भगवान श्रीकृष्ण के चरण जिन–जिन स्थानों पर पड़े हैं उन्हें तीर्थ स्थलों के रूप में विकसित

- **पॉक्सो है सुरक्षा का हथियार, बच्चों पर न करें अत्याचार**
- **बच्चों की मुस्कान है अनमोल, इसे सुरक्षित रखें हर हाल**
- **स्वच्छता ही सेवा**
- **स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता**

D16056/25

करने का संकल्प भी सरकार ने लिया है। सुशासन में समाज के सभी अंगों की सहभागिता जरूरी है। सरकार ने महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए प्रदेश के शूरवीरों के जीवन और राष्ट्र के प्रति बलिदान की स्मृतियों को चिरस्थायी बनाने के साथ भावी पीढ़ी को प्रेरित करने के लिये **भारत वीर संग्रहालय** की स्थापना का भी निर्णय लिया है।

भगवान श्रीराम की अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा से सभी गौरवान्वित हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में दृढ़ संकल्पित होकर राम राज्य और सुशासन की अवधारणा को धर्म, संस्कृति और विकास के बेहतर समन्वय के रूप में महाशिवरात्रि से गुड़ीपड़वा के मध्य उज्जैन में भव्य विक्रम व्यापार और उद्योग मेले का आयोजन किया गया। यह प्रदेश के धार्मिक, सांस्कृति, आध्यात्मिक और आर्थिक विकास का प्रतिबिंब था। इसमें विक्रम वैदिक घड़ी, विक्रम पंचांग के लोकार्पण के साथ सम्राट विक्रमादित्य अलंकरण समारोह भी आयोजित किया गया।

D16056/25

मध्यप्रदेश आध्यत्मिक और प्रभु श्रीराम के प्रति असीम श्रद्धा से सुशासित है। प्रदेशवासियों ने अयोध्या में प्रभु श्रीराम के भव्य मन्दिर की प्राण प्रतिष्ठा के ऐतिहासिकता की खुशियों को प्रभात फेरियों, कलश यात्राओं तथा विशेष स्वच्छता अभियान और दीपदान की रोशनी से जगमग कर अभिव्यक्त किया। लोकाचार और व्यवहार में भी वह अनंत खुशियां दिखाई दीं। अयोध्या और हरिद्वार की तर्ज पर मध्यप्रदेश के घाटों को विकसित करने का निर्णय लिया गया है। पवित्र नगरी चित्रकूट को विश्व स्तरीय धार्मिक एवं पर्यटन स्थल के स्वरूप में विकसित करने और मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना से प्रदेश के वरिष्ठ नागरिकों को हवाई और रेल मार्ग से भगवान श्रीराम के दर्शन के लिए अयोध्या की यात्रा का संकल्प जनता की खुशहाली का प्रतीक है।

सुशासन के लिये मुख्यमंत्री डॉ. यादव की सोच स्पष्ट है कि समाज के सभी वर्गों की सहभागिता के साथ सबके विकास को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ें। प्रदेश में प्रत्येक स्तर पर त्वरित पारदर्शी उत्तरदायी और संवेदनशील शासन व्यवस्था को सुनिश्चित करने की दिशा में प्रभावी कदम उठाये जा रहे हैं। प्रत्येक संभाग में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए प्रत्येक संभाग में एम्स की तर्ज पर मध्यप्रदेश इन्स्टीटयूट ऑफ मेडिकल साइंस मेडिकल साइंस स्थापित करने की ओर कदम बढ़ाए जा रहे हैं।

सुशासन का समग्र परिणाम जवाबदेही, पारदर्शिता, भागीदारी, प्रभावशीलता और दक्षता में दिखाई पड़ता है। नियम स्पष्ट और सरल हों जिसे आम आदमी आसानी से समझ सके, उसे कोई परेशानी न हो। प्रदेश के बहुसंख्यक किसानों की बेहतरी के लिए मुख्यमंत्री सिंचाई टास्क फोर्स का गठन तथा प्राकृतिक खेती को समृद्ध और आधुनिक बनाएं जाने की कोशिशें, मध्यप्रदेश में दाल मिशन की शुरुआत, बागवानी के क्षेत्रफल को 20 लाख हेक्टेयर से बढ़ाकर 30 लाख हेक्टेयर किया जाने के निर्णय सुशासन की दिशा में बेहद सकारात्मक संदेश हैं।

सतत् विकास के कुछ दूरदर्शी तथा व्यापक उद्देश्य हैं जो भाषा, वर्ग, जाति तथा क्षेत्रीय पाबंदियों से परे हैं। समता तथा न्याय के साथ अधिकांश लोगों का जीवन स्तर पोषित हो और मुक्त, समावेशीय तथा भागीदारी निर्णय प्रक्रिया हो, यही सुशासित प्रदेश चाहता है। राम राज्य की अवधारणा पर आधारित लोककल्याण के कार्य मध्यप्रदेश के करोड़ों लोगों की बेहतरी का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

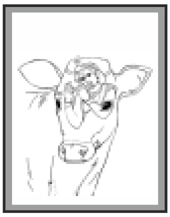

गोरक्षा विभाग, दिल्ली प्रांत की बैठक संपन्न

नई दिल्ली। विश्व हिंदू परिषद गो रक्षा विभाग दिल्ली प्रांत की मासिक प्रांतीय बैठक गत 22 जून को हरेवली गौशाला में प्रांत एवं जिले के दायित्ववान कार्यकर्ताओं के उपस्थिति में सफलता पूर्वक संपन्न हुई। बैठक में राष्ट्रीय सह गोरक्षा प्रमुख माननीय केशव राजू जी, दिल्ली प्रांत के संगठन मंत्री सुबोध जी, भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद के पूर्व महामंत्री मा. राजेंद्र सिंघल जी व हरेवली गौशाला के चेयरमैन उपस्थित रहे। उन्होंने इस शुभ अवसर पर अपना आशीष वचन दिया। हरेवली गौशाला के महामंत्री प्रमोद जी सहरावत ने बैठक व्यवस्था में सहयोग और आवभगत की।

इस अवसर पर गोरक्षा दिल्ली प्रांत प्रमुख जगबीर गौड़ जी, सह गोरक्षा प्रमुख रणबीर सिंह जी, सह गोरक्षा प्रमुख विजेंद्र जी तंवर एवं देशी गोवंश रक्षण संवर्धन न्यास के प्रांत महामंत्री नीरज जी अग्रवाल, गोरक्षण संवर्धन न्यास के कोषाध्यक्ष जितेन्द्र कुमार मिश्रा जी, दिल्ली गोशाला सम्पर्क प्रमुख अशोक सोलंकी जी तथा टोली प्रांत सदस्य एवं जिला के दायित्ववान कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही। जगबीर गौड़ जी ने मंच का संचालन किया और बैठक में आए हुए सभी लोगों का परिचय कराया। गोवंश रक्षण संवर्धन सम्बंधित सभी विषयों पर प्रकाश डालते हुए गौ उत्पाद के उत्पादन, प्रशिक्षण, वितरण, उत्पाद के प्रचार–प्रसार से अवगत कराया। मा. केशव राजू जी ने देशी गोवंश रक्षण संवर्धन सम्बंधित विषय से संबंधित राष्ट्रीय स्तर पर किए गए सभी प्रयासों पर विशेष ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने गौ उत्पादों की गुणवत्ता एवं उत्पादित वस्तुओं को संपूर्ण भारत में वितरण से संबंधित विषय पर प्रकाश डाला। गोबर से खेती करने एवं गोमूत्र से जुड़ी जानकारी उपस्थित कार्यकर्ताओं को दी। **गोमाता को राष्ट्र माता** की घोषणा कराने हेतु स्थानीय प्रशासन को न्यास द्वारा पारित प्रस्ताव दिए जाने की सर्व सम्मति से सहमति बनी। अंत में आए हुए सभी कार्यकर्ताओं को धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक संपन्न हुई।

प्रस्तुति : जगबीर गौड़
गोरक्षा प्रमुख, दिल्ली प्रांत

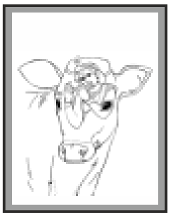

भा.गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद हिमाचल प्रदेश की बैठक आयोजित

शिमला। भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (पंजी. न्यास), हिमाचल प्रदेश की वैठक विहिप प्रांत कार्यालय महादेव कुन्ज संदल चक्कर शिमला में, गत 30 जून को आयोजित हुई। बैठक का शुभारम्भ सामूहिक रूप से 'ऊँ' का उच्चारण और श्री राम जय राम जय जय राम, विजय महामंत्र की 13 आवृत्तियों से हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री प्रेम शंकर प्रान्त संगठन मन्त्री व न्यास के पालक ने की। न्यास के कुछ पदाधिकारी पर्याप्त सक्रियता से कार्य नहीं कर रहे थे, इसलिए सर्वप्रथम न्यास के पुनर्गठन का प्रस्ताव रखा गया। बैठक में निम्नलिखित सदस्यों ने भाग लिया :– सर्व श्री ललित शर्मा, अनिल सरस्वती, नेक राम वर्मा, राम ऋषि भारद्वाज, रति राम शर्मा, राजेन्द्र भारद्वाज आदि।

बैठक में सर्वसम्मति से वि.हि.प.हि.प्र. प्रान्त संगठन मन्त्री प्रेम शंकरजी ने निम्नलिखित अवैतनिक पदों के लिए स्वयंसेवकों को मनोनीत किया :–

क्र.	नाम	पद	मोबाईल	पता
01.	श्री ललित शर्मा	अध्यक्ष	9418079820	गांव शकराह लोक मित्र टूटू शिमला। संचालक हिमधेनु गौशाला।
02.	श्री अनिल सरस्वती,	उपाध्यक्ष (प्रथम)	7591006800	आयकर अधिवक्ता, गौहित स्वयंसेवक मैत्री सदन, गांव शकराला डाक. मल्याना शिमला–6
03.	श्री नेक राम वर्मा	उपाध्यक्ष (द्वितीय)	9418450555	गांव वनगढ़ डाक. कुफटु तह. कण्डाघाट सोलन (से.नि.एच.आर.टी.सी.)
04.	श्री रामऋषि भारद्वाज	महामन्त्री	9418685745 7807409745	सुखधाम टूटू शिमला। (से.नि.कार्यालय महालेखाकार.)।
05.	श्री रति राम शर्मा	सहमन्त्री	9418020800	गांव शकराला डाक. मल्याना मैहली शिमला (से.नि.सचिवालय,कर्मकांडी विद्वान)।

इस कार्यकारिणी के अन्य पदाधिकारी क्रमशः – लेखाकार, कोशाध्यक्ष, अंक्षेक, गव्य–सिद्ध, पंचगव्य वैद्य चिकित्सक, गोवंश आधारित प्राकृतिक–कृषि तन्त्र–तज्ञ, गौ–विद्या वैज्ञानिक, आदि आगामी बैठक में मनोनीत किए जाने का प्रस्ताव रखा गया। अन्त में राष्ट्रीय जय घोष के बाद पूर्णता मन्त्र के साथ बैठक का गरिमापूर्ण समापन हुआ।

प्रस्तुति : ललित शर्मा एवं रामऋषि भारद्वाज

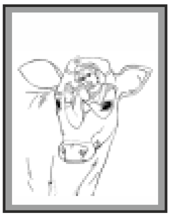

मेरठ प्रांत, गोरक्षा विभाग की बैठक संपन्न

मेरठ प्रांत, गोरक्षा विभाग की बैठक अनेक कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में संपन्न हुई। इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद के राष्ट्रीय गोरक्षा प्रमुख माननीय दिनेश उपाध्याय जी ने गोरक्षा विभाग के विस्तार एवं आगामी योजना पर प्रकाश डाला। आयुर्वेद पंचगव्य चिकित्सा पर डॉ. माधवी गोस्वामी, केंद्रीय उपाध्यक्ष गोरक्षा विभाग का प्रबोधन हुआ तथा पंचगव्य गौ उत्पादों की प्रदर्शनी में जानकारियां देकर गो सेवकों को प्रोत्साहित किया गया।

अलीगढ़ में नकली पनीर बनाकर एनसीआर में खपाता था गिरोह

प्रतिकिलो 40 रुपये आती थी लागत, पांच गुना अधिक में बेचते थे

पूछताछ में आरोपित ने बताया कि छह माह से फैक्ट्री में पेंटिंग रंग, केमिकल, एग्री उत्पाद व रिफाइंड तेल से दो तरह का पनीर बना रहे थे। नकली पनीर तैयार करने में 35 से 40 रुपये प्रति किलो खर्च आ रहा था। इसके बाद नकली पनीर को मोटे मुनाफे के साथ नोएडा, गाजियाबाद और फरीदाबाद में 180 और 220 रुपये किलो में खपा रहे थे।

नोएडा। नकली पनीर तैयार कर एनसीआर में खपाने वाले एक अंतरराज्यीय गिरोह का नोएडा पुलिस ने पर्दाफाश कर सरगना समेत चार लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने 14 क्विंटल नकली पनीर बरामद किया है। खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने नमूने जांच के लिए लैब भेजे हैं। वहीं मौके से पनीर बनाने में प्रयोग होने वाली मशीन, मिक्सर ग्राइंडर, 25–25 किलो के धौलपुर फ्रेश स्किम्ड मिल्क पाउडर के दो कट्टे, पांच कट्टे रेड बुल प्रीमियम क्वालिटी एग्री प्रोडक्ट सार्टेक्स क्लीन, 15–15 किलो के दो टीन रिफाइंड पामोलिन, चार किलोग्राम नीला रंग, दो शीशी पोस्टर कलर बरामद हुआ।

डीसीपी सेंट्रल नोएडा शक्ति मोहन अवस्थी जी ने बताया कि आरोपितों की पहचान ड्राइवर गुलफाम व हेल्पर नावेद व इकलाख के रूप हुई। तीनों नकली पनीर को एनसीआर में खपाने जा रहे थे। पुलिस ने चेकिंग के दौरान दबोच लिया। पूछताछ में गुलफाम ने मालिक गुड्डू उर्फ हरीश व उसके भाई अफसर के बारे में जानकारी दी। बताया कि अलीगढ़ के गांव सहजपुरा में चल रही फैक्ट्री में नकली पनीर बनाया जाता है। पुलिस ने मौके पर जांच की तो वहां पर करीब दो बीघे में फैक्ट्री चलती मिली। पुलिस ने गुड्डू को दबोच लिया। पूछताछ में गुड्डू ने बताया कि दोनों भाई फरीदाबाद में पनीर बनाने का काम करते थे। वहीं से नकली पनीर बनाने का आइडिया मिला था।

आक्रोशित हिन्दूवादी संगठनों ने जताया रोष
गोवंश का कटा हुआ सिर पड़ा मिला

महोबा। उत्तर प्रदेश में महोबा के सदर कोतवाली क्षेत्र में गत माह बकरीद के मौके पर एक गोवंश का कटा हुआ सिर पड़ा पाए जाने से सनसनी फैल गयी। घटना से आक्रोशित हिन्दूवादी संगठनों के सैकड़ों कार्यकर्ताओ ने मौके पर पहुंचकर हंगामा किया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की है। तनाव के मद्देनजर पुलिस के साथ पीएसी ने नगर में गस्त किया।

पुलिस उप अधीक्षक दीपक दुबे जी ने बताया की मुख्यालय में पुलिस अधीक्षक आवास के पीछे काशीराम कालोनी में गोवंश का कटा हुआ सिर पाए जाने की सूचना मिली। खबर फैलते ही घटनास्थल पर सैकड़ों की भीड़ जमा हो गई। गोवंश के कटे सिर का रात में ही पोस्टमार्टम कराया गया। प्रकरण में अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करके उन्हें गिरफ्तार किए जाने के प्रयास जारी हैं।

उधर उप जिलाधिकारी सदर जितेंद्र कुमार जी ने बताया कि घटना को लेकर नगर में हल्का तनाव है लेकिन हालात शान्ति पूर्ण और काबू में हैं। स्थिति पर नियंत्रण रखने के लिए पुलिस के साथ पीएसी की टुकड़ियों से गस्त कराई गई। स्थिति नियंत्रण में है।

शान्ति व्यवस्था पर खलल डालने का कुत्सित प्रयास

पुलिस ने बताया कि बकरीद में गोवंश की कुर्बानी पर शासन की कड़ी रोक के बावजूद यह घटना नगर में शान्ति व्यवस्था पर खलल डालने का कुत्सित प्रयास किया गया। पुलिस ने सभी धर्म संप्रदाय के प्रमुखों से संपर्क साध नगर के माहौल को बिगड़ने से रोका। घटना की जांच के लिए पुलिस की आधा दर्जन टीमें गठित की गयी हैं।

कांवड़ मार्ग पर नहीं बिकेगा खुले में मांस

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आगामी कांवड़ यात्रा, मोहर्रम और रथयात्रा को लेकर आला अधिकारियों के साथ एक उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की। यूपी के पुलिस आयुक्तों, मंडलायुक्तों, डीएम और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षकों को संबोधित करते हुए सीएम योगी ने निर्देश दिए कि सभी आयोजन श्रद्धा, सुरक्षा और समरसता के साथ सम्पन्न हों, इसके लिए प्रशासनिक मशीनरी को पूरी संवेदनशीलता और सतर्कता के साथ कार्य करना होगा। इस दौरान कांवड़ यात्रा को लेकर मुख्यमंत्री ने विशेष निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि कांवड़ यात्रा मार्ग पर कहीं भी खुले में मांस आदि की बिक्री न हो। इसके साथ ही सभी दुकानदारों को स्पष्ट रूप से नाम लिखना होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि यात्रा मार्ग पर डीजे, ढोल–ताशा और संगीत की ध्वनि निर्धारित मानकों के अनुरूप ही होनी चाहिए। कानफोडू आवाज, भड़काऊ नारे और परंपरा से इतर रूट परिवर्तन किसी दशा में स्वीकार्य नहीं होंगे। उन्होंने कहा कि शोभा यात्रा के लिए पेड़ काटने की इजाजत नहीं होगी।

Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

Cow Studies
as Interdisciplinary Curriculum: A Comprehensive Analysis

Introducing Cow Studies (गौ-अध्ययन) into the curriculum of schools and colleges in India could positively contribute to a deeper understanding and appreciation of the cultural and religious significance of cows in Hinduism. At first glance, such an initiative seems rooted in an intention to strengthen students' understanding of India's deep-seated traditions. Yet, this subject raises more complex questions regarding curricular relevance, democratic inclusivity and educational priorities.

Historically, the cow holds an iconic place within Indian civilization. In Hindu philosophy, the cow is considered not just an animal but a sacred embodiment of कामधेनु- the wish-fulfilling divine bovine. Ancient texts such as the **Rigveda** and later scriptures like the **Mahabharata** and **Manusmriti** frequently extol the virtues of the cow, portraying it as a giver of nourishment, wealth and spiritual merit. Beyond mythology and theology, the cow has had tangible socio-economic significance in the Indian agrarian economy. Its role in sustainable farming- through dung-based fertilizers, bio-gas and traditional ploughing practices has historically underpinned rural livelihoods. Proponents of Cow Studies argue that formal academic engagement with such themes would not only preserve this cultural and agricultural legacy but also instill in students a profound appreciation for India's indigenous knowledge systems.

On a pragmatic level, introducing Cow Studies could be seen as an interdisciplinary initiative intersecting agriculture, environmental sustainability, history and economics. In an era where industrialized farming practices dominate and indigenous cattle breeds face decline, research-oriented courses on cattle biodiversity, organic manure, panchagavya (a traditional mixture of cow-derived products with claimed medicinal uses) and eco-friendly rural industries could revive interest in sustainable and localized models of development. Furthermore, proponents suggest that such curricula might encourage entrepreneurship in organic farming, rural industries and dairy innovations- aligning with contemporary

goals of **Aatmanirbhar Bharat** (Self-reliant India) and rural empowerment.

Yet, despite these benefits, significant challenges merit careful scrutiny. The most immediate question pertains to the secular character of Indian education. Article 28 of the Indian Constitution mandates secular instruction in publicly funded educational institutions. Although the study of the cow's agrarian, economic and ecological aspects may be academically valid; the risk lies in its potential conflation with religious glorification. Critics argue that privileging one religiously symbolic entity may alienate students from minority communities or non-religious backgrounds, thereby undermining India's pluralistic and inclusive fabric. The Supreme Court of India, in multiple rulings, has underscored the importance of maintaining religious neutrality in state-run institutions. Thus, the framing and pedagogical approach of Cow Studies would require extraordinary caution and academic objectivity to prevent ideological or communal overtones.

Another pertinent dimension concerns academic prioritization and resource allocation. India's education system already grapples with pressing deficits in basic literacy, scientific education, digital literacy and skill development. Critics argue that diverting scarce curricular space and resources towards a specialized subject like Cow Studies may not align with immediate educational priorities, especially in an era of rapid technological and economic transformation. Moreover, the feasibility of implementing such courses at a Pan-India level raises questions. How would

course content be standardized across diverse linguistic and cultural regions? Would it be a compulsory subject, an elective or a specialized vocational module? The logistical challenges of preparing scientifically rigorous textbooks, recruiting fully qualified educators and designing inclusive syllabi cannot merely be underestimated.

From a policy perspective, it is essential to reflect on comparative models of culturally oriented education. For instance, Japan incorporates studies on its indigenous practices such as rice cultivation and local festivals within primary education under broader cultural heritage programs. However, these are usually embedded within secular and inclusive frameworks that emphasize cultural literacy rather than religious doctrine. Similarly, India's National Education Policy (NEP) 2020 promotes the integration of local knowledge systems, but it emphasizes critical thinking, scientific inquiry and interdisciplinary learning as foundational pillars. Any Cow Studies curriculum would need to align with these national policy imperatives and uphold constitutional values.

Dr. Aastha Pathak

GOMATA in Hindu Religion
A Symbol of Dharma, Prosperity and Reverence

In the vast tapestry of Sanatan Dharma—commonly known as Hinduism—the cow holds a place of exceptional reverence. Far more than a domestic animal, the cow is venerated as a sacred symbol of motherhood, non-violence, prosperity, and dharma. In the Hindu worldview, the cow is Gomata—the mother who nourishes humanity with her milk, her selfless demeanor, and her deep association with the divine.

This article explores the multifaceted role of the cow in Hindu religion, mythology, daily life, agrarian economy, and its timeless presence in Indian culture and spirituality.

Cow as a Symbol of Divine Motherhood

In Hindu thought, the cow is honored as a symbol of motherhood (Mata). Just as a mother selflessly nurtures her child, the cow provides milk without discrimination. This nurturing aspect elevates the cow to a near-

divine status, particularly in a tradition that regards the feminine principle (Shakti) as the source of all life and sustenance.

The Rigveda, one of the most ancient texts in the world, refers to the cow as Aghnya—one who should not be hurt or harmed. This recognition of the cow's sanctity has carried forward through the Yajurveda, Atharvaveda, and Bhagavad Gita, all of which describe the cow as a sacred animal deserving respect, care, and worship.

Kamadhenu: The Wish-Fulfilling Cow

Among the many divine cows in Hindu mythology, Kamadhenu holds a special place. She is considered the cow of plenty, capable of fulfilling any desire. Born from the churning of the ocean (Samudra Manthan), Kamadhenu is said to reside in the heavenly realms and is the mother of all cows.

Kamadhenu represents the embodiment of abundance, auspiciousness, and generosity. She is often depicted as a white cow with the face of a woman, wings of a bird, and a peacock's tail—symbolizing her celestial and multidimensional nature. Revering the cow, therefore, is akin to revering Lakshmi, the goddess of wealth and prosperity.

Cow in the Lives of Great Saints and Deities

In Hindu lore, the cow is not just revered in texts, but in the lives of saints, sages, and incarnations of Vishnu.

Lord Krishna, perhaps the most beloved deity in the Hindu pantheon, is known as Govinda (protector of cows) and Gopala (caretaker of cows). Born in the pastoral land of Vrindavan, Krishna's early life revolved around cows and cowherds. His divine flute, played among the cows and Gopis, symbolizes the harmony between man, nature, and divinity.

Rishi Vashishta, one of the Saptarishis, owned a divine cow named Nandini, daughter of Kamadhenu. This cow could produce anything desired and supported the sage in his Vedic rituals.

Mahatma Gandhi, the father of modern India, considered cow protection a cornerstone of Hindu civilization. He once said, "The cow to me is a sermon on pity. It is a symbol of life."

Cow in Daily Hindu Rituals and Festivals

In Hindu households, the cow is often part of daily rituals. Panchagavya, a sacred mixture of five cow-derived products (milk, curd, ghee, urine, and dung), is used in purification rituals, yajnas, and temple worship. It is believed to possess spiritual and healing properties and is considered highly sattvic (pure).

Festivals like Gopashtami, Govardhan Puja, and Mattu Pongal are celebrated in honor of cows. On these days, cows are bathed, decorated with garlands and turmeric, their horns painted, and they are fed with jaggery, rice, and special treats as a mark of gratitude.

The Tulsi Vivah, a ritual marriage of the sacred Tulsi plant with Lord Vishnu, often includes a cow in the ceremonial processions, symbolizing auspiciousness and divine blessings.

Economic and Agrarian Value of the Cow

In agrarian Bharat, the cow is not only spiritually significant but also economically invaluable. Cow dung is a primary source of organic fertilizer, helping enrich soil fertility and sustain traditional farming practices. Cow dung cakes are used as fuel in rural households and even for smearing floors and walls, believed to purify the space and repel insects.

Cow urine (Gomutra), considered sacred, is used in Ayurvedic preparations and natural pesticides, promoting sustainable agriculture. The presence of cows supports cow-based rural economies, providing income through dairy, compost, biogas, and eco-friendly products.

A single cow can benefit an entire family, even a community, when treated with respect and care. The Gaushala system—cow shelters run by dharmic institutions—serves as a model of rural development, social service, and spiritual ecology.

Cow as a Pillar of Ahimsa and Ecology

The concept of Ahimsa (non-violence) is central to Hindu dharma. The cow, as a gentle and non-threatening being, embodies this ideal. Hindu sages and scriptures advocate protection of all life forms, with the cow at the center of this ecological ethics.

Ancient Indian society was built around cow-centric sustainable living, where cows were treated not as commodities but as family members. Modern scientific studies are now validating the environmental benefits of traditional cow-based farming, including carbon sequestration, soil regeneration, and biodiversity preservation.

Cow Protection: A National and Cultural Ideal

Cow protection has historically been a national and cultural movement. In pre-independence India, several cow protection movements emerged as part of the broader cultural renaissance. Organizations inspired by Sanatan values have established thousands of Gaushalas across the country.

The Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) and its affiliated organizations, such as Bharatiya Gau Raksha Dal, have played a pivotal role in promoting cow protection, rural development, and ethical agriculture. Cow protection is seen not merely as a religious act but as a duty toward Dharma, Rashtra (nation), and Prakriti (nature).

The Cow in the Modern Hindu Consciousness

Today, as India marches forward in science, technology, and industry, there is a growing reawakening to the wisdom of traditional cow-based living. From urban Gaushalas to organic farming ventures, from cow-based Ayurveda to Vedic schools teaching cow protection, a silent revolution is taking place.

Youth are rediscovering the value of cows not only in the spiritual realm but in creating an Atmanirbhar Bharat (self-reliant India). Cows are central to initiatives such as zero-budget natural farming, panchgavya-based healthcare, and Vedic education.

In temples, homes, and hearts, the cow continues to live as Gomata, not just a symbol, but a living embodiment of Dharma, Satya, and Seva.

UPI
BHIM UPI Payments Accepted at
BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD
Account Number : 04072010038910, IFSC Code: PUNB0040710
Scan and Pay using any UPI supported Apps

गोसम्पदा पत्रिका के
सदस्य बनने के लिए
सदस्यता राशि UPI द्वारा
भुगतान कर सकते हैं

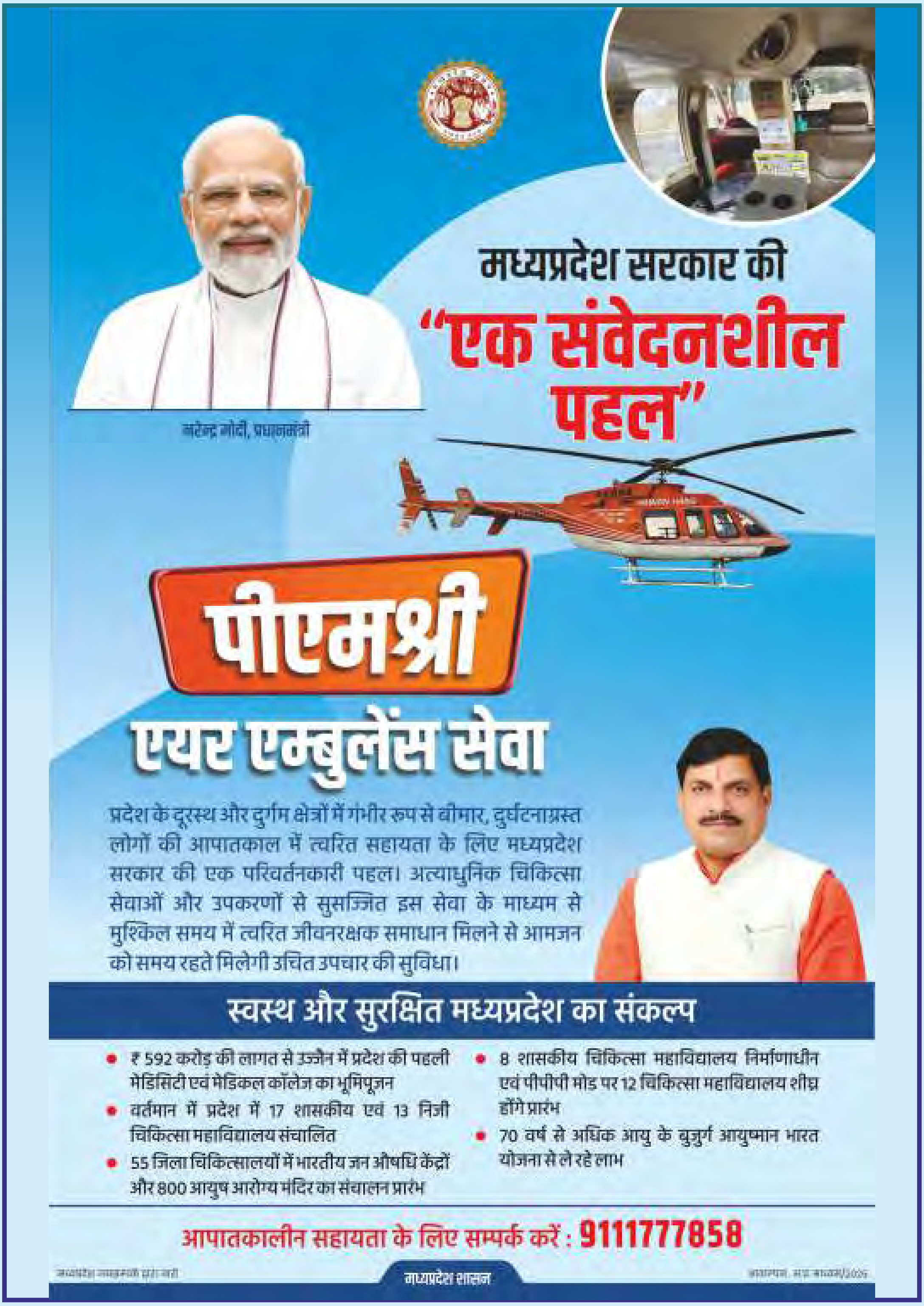

मध्यप्रदेश सरकार की
"एक संवेदनशील पहल"
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
पीएमश्री
एयर एम्बुलेंस सेवा
प्रदेश के दूरस्थ और दुर्गम क्षेत्रों में गंभीर रूप से बीमार, दुर्घटनाग्रस्त लोगों की आपातकाल में त्वरित सहायता के लिए मध्यप्रदेश सरकार की एक परिवर्तनकारी पहल। अत्याधुनिक चिकित्सा सेवाओं और उपकरणों से सुसज्जित इस सेवा के माध्यम से मुश्किल समय में त्वरित जीवनरक्षक समाधान मिलने से आमजन को समय रहते मिलेगी उचित उपचार की सुविधा।
स्वस्थ और सुरक्षित मध्यप्रदेश का संकल्प
₹ 592 करोड़ की लागत से उज्जैन में प्रदेश की पहली मेडिसिटी एवं मेडिकल कॉलेज का भूमिपूजन
वर्तमान में प्रदेश में 17 शासकीय एवं 13 निजी चिकित्सा महाविद्यालय संचालित
55 जिला चिकित्सालयों में भारतीय जन औषधि केंद्रों और 800 आयुष आरोग्य मंदिर का संचालन प्रारंभ
8 शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय निर्माणाधीन एवं पीपीपी मोड पर 12 चिकित्सा महाविद्यालय शीघ्र होंगे प्रारंभ
70 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्ग आयुष्मान भारत योजना से ले रहे लाभ
आपातकालीन सहायता के लिए सम्पर्क करें : 9111777858
मध्यप्रदेश शासन

D16056/25

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
भोपाल, इंदौर, ग्वालियर
जबलपुर, रीवा, उज्जैन, खजुराहो
और सिंगरौली से
अंतरराज्यीय उड़ान
मध्यप्रदेश में पर्यटन
अब नयी ऊंचाइयों पर
पीएमश्री पर्यटन वायु सेवा
संचालन प्रारंभ
बुकिंग काउंटर
भोपाल, इंदौर और जबलपुर एयरपोर्ट
ऑनलाइन बुकिंग
www.flyola.in
- डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेश शासन

D16056/25

सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय
सेवा सुशासन और जनकल्याण का अडिग संकल्प
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री
नागरिक सुविधा और राज्य की प्रशासनिक प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए तकनीकी सुधार डिजिटलाइजेशन, ई-रिकॉर्ड के माध्यम से आम-जन के कार्यों को आसान बनाना और हितधारकों को सीधा लाभ देने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है।
सरकार ने सुशासन और नागरिक सेवा को प्राथमिकता देकर हर वर्ग का लाभ सुनिश्चित किया है।
इन अभूतपूर्व प्रयासों से मध्यप्रदेश अब उन्नति के नए युग में प्रवेश कर रहा है।
• नामांतरण, बंटवारा जैसे विभिन्न राजस्व प्रकरणों के ऑनलाइन निराकरण के लिए सभी 55 जिलों में साइबर तहसील परियोजना लागू। यह पहल करने वाला मध्यप्रदेश पहला राज्य।
• संपदा 2.0 रजिस्ट्री के लिए ई-पंजीयन एवं ई-स्टाम्पिंग की नवीन प्रणाली: दस्तावेजों के ऑनलाइन निष्पादन, डीड वेरिफिकेशन आदि कार्य होंगे आसान।
• मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में संभागीय समीक्षा बैठकों का आयोजन। कानून व्यवस्था के साथ बड़े पैमाने पर किए गए विकास कार्यों के भूमिपूजन एवं लोकार्पण।
• राजस्व महाअभियान के दोनों चरणों में 80 लाख राजस्व प्रकरणों का निराकरण।
• जिला, संभाग, तहसील आदि की सीमाओं के पुनर्निर्धारण के लिए पृथक प्रशासनिक इकाई पुनर्गठन आयोग बनाने का निर्णय।
• मध्यप्रदेश सरकार के मंत्री अब स्वयं भरेंगे अपना इनकम टैक्स।
• प्रदेश की अंतर्राज्यीय सीमाओं पर 1 जुलाई, 2024 से परिवहन जांच चौकियों के स्थान पर रोड सेफ्टी एंड इनफोर्समेंट चेकिंग पॉइंट की व्यवस्था शुरू।
• प्रदेश के किसी भी जवान के शहीद होने पर दी जाने वाली सहायता राशि में से 50% शहीद की पत्नी और 50% माता-पिता को देने का निर्णय।
• 105 वर्ग मीटर तक के आवासीय भू-खंडों के लिए ऑनलाइन आवेदन कर शीघ्र अनुज्ञा प्राप्त करने और 300 वर्ग मीटर तक के आवासीय भू-खंडों पर त्वरित अनुज्ञा प्रदान करने की व्यवस्था लागू।
• बालाघाट के कमकोदादर में हुई मुठभेड़ में नक्सलियों को धूल चटाने वाले 24 शासकीय पुलिस सेवकों का आउट ऑफ टर्न प्रमोशन।
• प्रदेश में थानों की सीमाओं के पुनर्निर्धारण का कार्य तेजी से जारी।
• शासकीय सेवाओं में महिलाओं को अब 35% आरक्षण।
• भूतपूर्व सैनिकों को शासकीय नौकरियों में आरक्षण।

D16056/25

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 जुलाई, 2025

D16056/25

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक - देवेन्द्र नायक